

DPN 6263

Title : धर्किं छाय विधि DHAKIN CHĀYA VIDHI

Run. No. 6954

Cat. No. 77

Micro. No.

Subject *Ritual*

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. / New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 28.5 x 11

Folios 4

Lines (in a page) 10

✓
Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

राजेन्द्र श्रेष्ठ

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Rajendra Shreshtha

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

□ Δ

□ धर्किनि छाय विधि ॥

P.T.O.

व्यक्तिनि या वरान ॥

यथा संभव देवाङ्गुः कर्पास तन्तुसंभवं
रत्नं कृष्णं तथा चित्रं प्रतिशीला महोत्तमं
द्यौर्दिकं देव देवाय एकचित्रः समाहितः ॥

इति धर्मिं द्वाय विधि ॥

इति धर्मिं द्वाय विधि ॥
द्वादशीया पूत द्वाया ॥ ... द्वादश नारायणाया पुतकारो कामाव सियदयक तमे।

△ अभिषेक कलश लंखन चन्दनादि आशीर्वादि ॥ उत्तरति, प्रतिष्ठा,
तृस्कं स्वयं, दुःखा पिंखा द्योय ॥ ॥

1101

11 ~~1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20~~

१०
 ५
 ०
 ५ १० १५ २० २५
 रधकिनिष्ठा यविधि ॥ पुतिगीला सिन्धुना जनुनिका ठिक ॥ धन थव २ वा ॥ लखय उकापका
 ममिना ॥ रुतवलि ॥ आवति वववति सरूपतिष्ठा ॥ पूजन सिद्धन वन्दन सिन्धुन यद्वाय
 वीत पूष्य वंदन ॥ नासिय थव २ दवयादान ॥ आस तादायापुजा ॥ उं अम्मा यरुट ॥ नरुल
 नसिद्धन ॥ साधन मूलमकुलधन ॥ १० ॥ उया ऊलि ॥ दद्यादि ॥ आवाहनादि ॥ नभावाश्च
 ॥ उं अय्येवतवा ॥ उं अयादि ॥ यजमानस्य मूकादं पुतिगीला उयशोकनाथ उं अविद्यापी
 ठिमहाद्वारं वायुमकुलमकिनी यथासंभवदवाश्च कप्यासितनुसंरुवं ॥ वकं रुक्मं तथाचि
 रं पुतिगीलामहाकुमं ॥ लोकिकंदवदवाय एकचिरुसमादित ॥ नरुलं नरुला रुला यरुय
 उगनायिस ॥ नरु नरु मरु काला संयुतावि विष्णुयमं ॥ सर्वपापविनिमूक ॥ सर्वकामसमन्वि
 त ॥ धनधन्यं वपुजादि पुत्रलक्ष्मीसमकुलं ॥ नरुलं वमुत नूनी यावत्संख्याविधीयत ॥ ताव
 द्दुर्घसहस्रानि वसदवानकपूरं ॥ मूगधादि ॥ पर्ववाश्च नपुशोकनं ॥ दक्षिणा इत्युदाव दव

॥ पुतिगीला उयशोकनाथ उं अविद्यापी
 ॥ उं अयादि ॥ यजमानस्य मूकादं पुतिगीला उयशोकनाथ उं अविद्यापी
 ॥ नरुलं नरुला रुला यरुय
 ॥ नरुलं वमुत नूनी यावत्संख्याविधीयत ॥ ताव

20

15

10

5

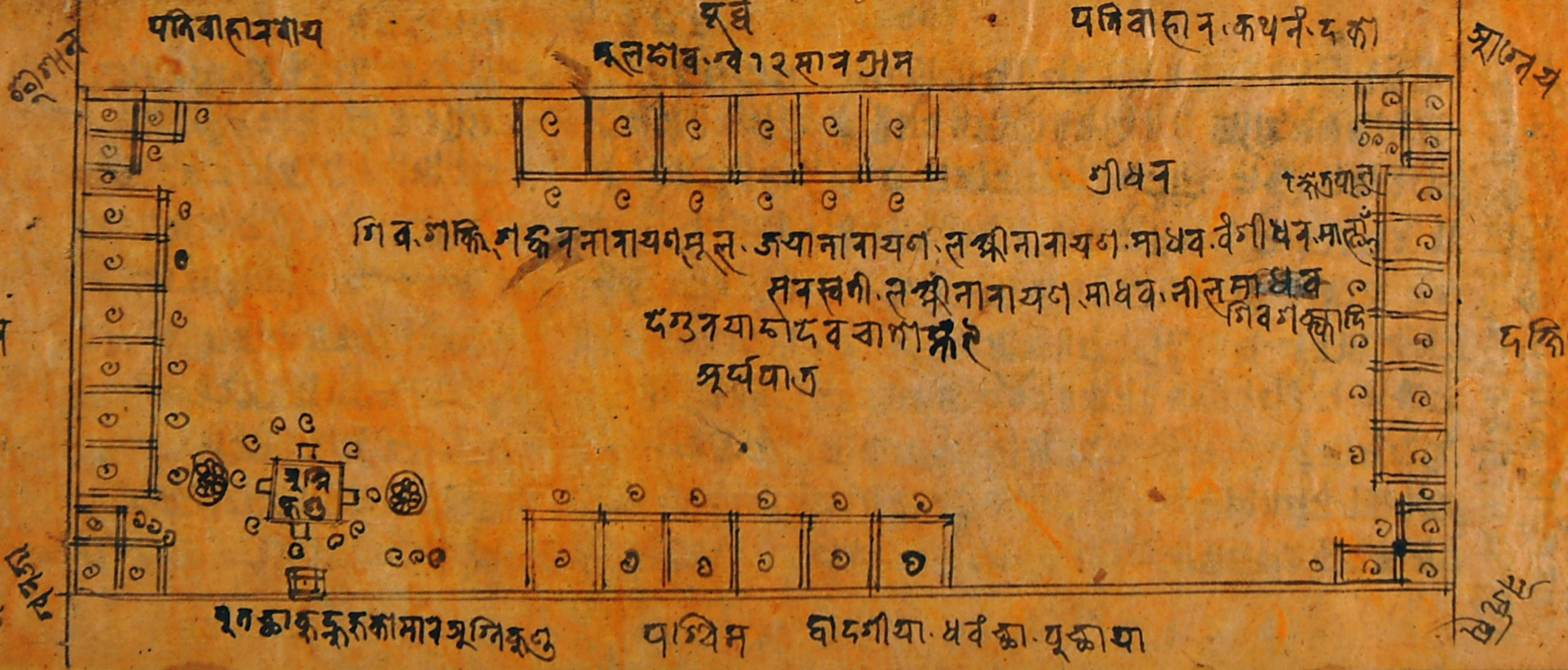
0

१ वा श्री ॥ उं गी ३ रुद्रिकाये द्वात्रयपुष्पादनवमुपशोकन कर्मकर्तुं गी
दुर्धवायुक्ता कनकमालिनी ३ रुद्रिकाये द्वा
संनमनं नमो पूजा कर्तुं गी कनकमालिनी ३ रुद्रिकाये द्वा

रविवनं पूजासन वाक्यायाव नायनहाय चननय धकिन गुगुनक रुयाव सिजवद निर
नयाव ॥ धकीनिशा द्वावन वलिष्ठ पूवननय ॥ न्वययव उ २ दक्षिणादे १ नय धकिनिस ॥ द्वा पा
दधकिनिपूजा यजमान पूष्यराजन यायममात्रयिन ॥ र्थकादिन न्वसियाव कंस्तानलीख द्वा
दगय ॥ उं गी ३ रुद्रिकाये द्वात्रयपुष्पादनवमुपशोकन कर्मकर्तुं गी
यायार्थानमः पूष्य २ ॥ पूष्यराजने ॥ वन्दनादिना विधिर्यपूजा ॥ द्वादयादि आवादनवादि
र्त्त ॥ धकिन इत्त वाक् ॥ यजमान सिजवदसिगर्प धकिन दाने कं नय ॥ उं गी ३ रुद्रिकाये द्वात्रयपुष्पादनवमुपशोकन कर्मकर्तुं गी
कनकयनय ॥ उं गी ३ रुद्रिकाये द्वात्रयपुष्पादनवमुपशोकन कर्मकर्तुं गी ॥ द्वादयियकाव न्वय
दक्षिणादे वं या कं काय धकिनि द्वाय ॥ इरायावदवपूजा याय कथने स्वल्पना ॥ धकिन
पूजा नवकाव द्वात्रयपुष्पादनवदृष्टये पूष्य नमः ॥ सुमहा माया रुद्रव सिवाक विराय ॥ ॥

अत्रिं १
॥ पूष्य नमः ॥ २

नृ गी सेवका ३ उं गी ३ रुद्रिकाये द्वात्रयपुष्पादनवमुपशोकन कर्मकर्तुं गी



5

10

15

20

25

धवनकावृद्ध कथने उपासनकायाय कथयूजायाय कथयूजाधूनकाय पूजायाय । १

उं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
विष्णुसहस्रनाम ॥ १ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

७

रदादगीयायूतकाया ॥ कृपायैव गच्छाय विष्णुयामनुगा ॥ उं अयादि ॥ गीमन्गी ३ नावायगरुदायकायय
विष्णुशरुनयैवगशमाधननिमित्तार्थगोस्रयायायानमः ॥ वातंसकननी ॥ उं सम्यामि ॥ यैवगशयजा
॥ सिजवदमिसनयाव दवस्ताने सात्र अमन्वउदववागावनुस्य आदिन मीतलेखयैवामनादि
स्ताने चवश्चदन ॥ सकल्यदवै यैवगशनराय ॥ उं सरुमुगीषाका ७२२ ॥ वात ॥ कायवगदय सक्षान
कृत्क ॥ उं यवासियवया ॥ खानेकृत्क ॥ उं या ४ रुतनी ॥ चवश्चायसवाय ॥ यैवगशकाय र्थकादिकथने
॥ दवस्यनालेखनराय ॥ दवस्यनारैख पूषविगवाय ॥ कृपा कदितया कंठयूजा ॥ आननि चकावि पून
स्वक ॥ अस्वक्रनि ॥ ॥ धनेनिदवयूजा ॥ पूर्वदायादि ॥ गिव गकि ॥ धनेनि मूल ॥ धनेनि छादगीनाय
यन दंनुययादादववागा सवस्वगी चनकृत्क ॥ धनेनि ज्यानावायन ॥ धनेनि लक्ष्मीनावायन
२ माधवर्क्ष २ नीलमाधव लीधन चनकृत्क ॥ धनेनि वीगीधन ॥ माला ॥ वलि ॥ स्रयादिथथकाथश्र
दिन विधिथयूजा ॥ ॥ धनेनि उपासनवाद्यनिस कथयूजायाय ॥ यरुक्षय ॥ वाक्क ॥ उं गीमन्गी ३

धूपदीप सकवर्क्ष कृत्क १ लक्ष्मीनावायन ३

रुगगुहियाकावज

१ वेष्वाग्नि या शुवामवकुगन

नावायगरुदायकाययविष्णुशरुनयैवगशमाधननिमित्तार्थ ॥ विधिथययूजाय ॥ अग्निस्त्रायनादौ यथारवि
धिमन्कुगकलगावर्जन थायाथायस ॥ उं अजियुठकन ॥ धकृकननगक ॥ घृणारुति गिलादुति यैवगशरामनि
लादुतिपूक्तने ॥ ॥ यथाकर्मस ॥ यविष्णुगधन यैवगशनराय चित्लादिगधन प्रतिकार्थकादिकथ
नेजाय ॥ पूर्वदायादि कायनयूजायाय कथने ॥ धानथायाथायस धानवातमख आमकुगयावाक्कया
कावशामकुगकाय ॥ गिवगकिधनकावः थदसकाय ॥ विधिथसकल्यसंकाय वलिपर्यक रुद्रायनास थथ
काथयर्थने ॥ यरुयाथायस वाकावः वस्त्रायनीत वंदनाकपाल अग्निसेरुव दण्ड आदिन सकवर्क्षकाय
॥ ॥ धनेनिपूतकाय ॥ यैवगशनरायाव चित्तवतगधन ॥ पूर्वदायादि गिवगकिर्त्त ॥ धनश्रुधिवा
सन नादावगत ॥ अर्घ्यायनालेखनरायसकल्य ॥ कलगायादवने हाकनकाव ॥ ॥ थदससकनया
नेकाय ॥ मूलगायूतकायविधिथ ॥ स्तानी ॥ उं अविनयमयनयविष्णु सकलदवान ॥ उं सरुमुगीषा का
७२२ यवयै ॥ दादनावायनादिसंकाय ॥ यरुक्रुया थायसवाकाव आमकुग काकायानेकाय द

१ कथनेदवदकासंकाय १ कंकनयूजायाय ४ पूनका १

॥ श्राद्धं ॥ ॥ धर्मेति पूर्वदात्रादिदवसकलक लाय धवश्वदन ॥ ॥ धर्मेति मूलदवयायुजाविधिरुकायादा
 व ध्यानवसन ध्यानयोदाव न दानदाव मजाश्राय दवयुजा मधुगात्यक ॥ मजाश्राय ॥ उं विष्णुपुत्रवर्कदि
 श्रमिणादिसकवदयवय ॥ वद ॥ उं सरुमणीषा ॥ का ॥ २२ ॥ उं गीनियदावि ॥ उं गीन्यन ॥ उं सुय ॥ अग्निगत्र ॥
 उं अग्निगत्र वसि ॥ उं अग्निगत्र वसि ॥ ॥ यरु मूल ॥ कृपा विरुमन ॥ अयव अयगा व न माव ॥ वलिदवनी धीया
 आवस ॥ महावलिदिय ॥ दाव ॥ निवव ॥ तयाव ॥ ॥ धवलिमहादवया ॥ कोनस ॥ तपस्वाक ॥ नृकया दव न वाय ॥
 का ॥ ॥ धनदवजाय ॥ र्थकादिकथनी ॥ र्थकाविरुका अनियाय ॥ सूर्यसाक्षी ॥ अकिषकादि ॥ धनदा दणीया
 ॥ ॥ ० ॥ ॥ २ सनिक्रुकाया ॥ दिगुत्रयाकन ॥ निरुदगुत्रयाकादव ॥ तव ॥ उदाव ॥ दगुत्रयाय ॥ गिवक
 लगया ॥ पूनकाविकायाव ॥ सियदयक म्रुनीतय ॥ म्रुतया ॥ दादगनायायगया ॥ पूनकाविकायाव ॥ सि
 यदयकतय ॥ दूध ॥ दूधया ॥ दाव ॥ निववदका ॥ कायाव ॥ अग्निदूधुयान विरुकाय ॥ ऊनालेपनवा

दाव ॥ वजिदायान ॥ मावका ने वयनय ॥ दूयादयं रग श्रुयाय ॥ मूलमनुग ॥ दातादवाव ॥ उं सैवपा
 मि ॥ र्थवग श्रुयाय ॥ मनुग ॥ दगुत्रयाका ॥ दववागा म्रुते ॥ सावगमव ॥ ३ ॥ सिजनथवस ॥ तयावस्ता
 ना लेख ॥ र्थवग श्रु ॥ धवश्वदन ॥ र्थवग श्रु नदवसकलहाय ॥ उं सरुमणीषा ॥ का ॥ २२ ॥ उं स्वस्तिन
 दु ॥ ॥ कायवगदूयाव ॥ तका न दूतक ॥ उं यवासिय ॥ लाने दूक ॥ उं आरुलनी ॥ धवश्वयगवो
 य ॥ र्थवग श्रुकाय ॥ दवसना लेखनहाय ॥ कथनी ॥ ॥ कथयुजायाय ॥ उयासमथाकायाद ॥ दवयुजाया
 य ॥ उं अग्निदि ॥ गीमगुणी ॥ नायायगहदावकाय स्वयविनागादगकर्म कर्तुं गीसूयायाधनिम ॥ ४ ॥ यजमा
 ननपूष्यराजन ॥ नायायगनमस्क ॥ सिद्धिभु ॥ गुत्रववकाय ॥ पूष्यराजन ॥ अग्निदि ॥ ॥ दावयुजादिदव
 पूजा ॥ वलित्व ॥ थथुदुध ॥ पतिवादावत्वी ॥ ॥ रुनीयुजायाय दार्वनिम ॥ दावग स्वयविगुचिया रावशकोयाय ॥
 उं वनमानाय ॥ थतिसर्वया ॥ ता ॥ पूर्वदि ॥ दावदवतास्य स्वयविगुर्कनम ॥ ४ ॥ दकिर्गदि ॥ दूसनी ॥ गिव
 गिकिकलग ॥ वापश्रमनुर्ककनपूतयात ॥ विधिध्रयुजायादाव ॥ ध्यानधयाधयगकाय ॥ मूलग ॥ ३ ॥ र्थका

धदरुपूतकाथशकात्रय

